A Pratibha Spandan Journal
SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

सिरमौरी लोक संस्कृति में विवाह संस्कार गीतों की परंपरा

Varsha Sharma[1], Dr. Purvi Luniyal[2]
1 Ph.D. Research Scholar,
Associate Professor and Dean Eternal University, Baru Sahib

Read the Article Online
Cite this Article
Published on 02 May, 2026
Sharma, V. and Luniyal, P. (2026). Sirmauri Lok Sanskriti Mein Vivah Sanskar Geeton Ki Paramparan. Swar Sindhu, 14(1), 180-184.

OPEN ACCESS CC BY

सारांश

यह शोध पत्र हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले के विवाह संस्कार के अन्तर्गत गाए जाने वाले पारंपरिक संस्कार गीतों का सांस्कृतिक एवं सामाजिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। सिरमौर में विवाह संस्कार केवल एक पारिवारिक आयोजन न होकर सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है। विवाह संस्कार मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा संस्कार माना जाता है तथा यह संस्कार एक अनुष्ठान, पारंपरिक रीति-रिवाज़ एवं सामुदायिक लोक संस्कृति अनूठी झलक है। सिरमौर में विवाह संस्कार की प्रत्येक रस्म को बहुत ही धुम-धाम और उत्साह के साथ मनाने का रिवाज़ है, तथा विवाह की प्रत्येक रस्म जैसे कार-पूजन, (ब्याह गणना) बधावा गीत, बटणा, तेलबाण, सेहराबंदी, फेरे, पड़ुवा, डोली विदाई, आदि पर गांव की महिलाएं बधाई गीत एवं मंगल गीत गाती है। इन गीतों को स्थानीय बोली में सरल एवं भावपूर्ण रुप से गाया जाता है। जो इन्हें जनमानस से जोड़ती है तथा लोक-संस्कृति पीढ़ियों के बीच जुड़ें रहने में भी गहरी भूमिका निभाती है। संस्कार गीतों में सामाजिक मर्यादाएं पारिवारिक उत्तरदायित्व एवं पारंपरिक जीवन मूल्य भी निहित रहते है। आधुनिकता एवं बदलती जीवनशैली के कारण यह पारंपरिक लोक संस्कृति विलुप्त होती जा रही है तथा इस अध्ययन का उद्देश्य न केवल इन गीतों की परंपरा को समझना है अपितु लोक संस्कृति की इस अमूल्य धरोहर एवं सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रुप से भावी पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास भी है।

मुख्य बिन्दु:- सिरमौरी विवाह परंपरा, सिरमौर के संस्कार गीत, लोक परंपरा, लोक संस्कार एवं रीति रिवाज़, सिरमौर, सामूहिक महिला गायन विवाह संस्कार।

परिचय

सिरमौर जिला हिमाचल प्रदेश के दक्षिण में स्थित है जो अपनी विशिष्ट भौगोलिक संरचना, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा समृद्ध लोक संस्कृति के लिए जाना जाता है। यहां की सांस्कृतिक एवं धार्मिक मान्यताएं स्थानीय देवी-देवताओं के इर्द-गिर्द ही पली है।। यह जिला हिमाचल प्रदेश के बाहरी हिमालय में स्थित है। यह सारा क्षेत्र लगभग पहाड़ी है तथा गिरी नदी इस जिले की सबसे बड़ी नदी है जो कि सिरमौर को दो भागों में विभक्त करती है जिसे गिरी आर एवं गिरी पार कहते है। इस जनपद में चूड़धार पर्वत, रेणुका झील, पांवटा साहिब जैसे अन्य कई धार्मिक स्थल तथा ऊँची-ऊँची पहाडियाँ, शांत वातावरण, हरे-भरे घने जंगल है। जो यहां की सुन्दरता को बढ़ाते है। सिरमौरी संस्कृति बहुत ही धनी एवं समृद्ध हैं। इस संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी यहां के बसने वालों ने यथावत संवारा, सजाया व संभाला भी है। यहां लोक गीतों, लोक नृत्यों पर्व त्यौहारों और संस्कारों का विशेष स्थान है, तथा जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेकों छोटे-बड़े संस्कार किए जाते है इन संस्कारों को बहुत ही उत्साह के साथ मनाया जाता है तथा सभी संस्कारों में विवाह संस्कार को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। विवाह संस्कार न केवल दो व्यक्तियों का बल्कि दो परिवारों और सामाजिक लोक परंपराओं का भी सांस्कृतिक संगम है।

उद्देश्य

- संस्कार गीतों में निहित सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक मूल्यों को समझना।
- विवाह संस्कारों की विभिन्न रस्मों में गीतों की भूमिका एवं उनके उपयोग का संक्षिप्त परिचय।
- युवा पीढ़ी को इन गीतों से अवगत करवाना।

अध्ययन का महत्व

यह शोध पत्र सिरमौर जिले के विवाह संस्कारों में गाए जाने वाले संस्कार गीतों की सांस्कृतिक एवं सामाजिक भूमिका को स्पष्ट करता है। ये गीत स्थानीय जीवन मूल्यों, पारिवारिक संबंधों परंपरागत मान्यताओं को अभिव्यक्त करते है। वर्तमान समय में लोक-परंपराओं का महत्व कम होता जा रहा है। जिसे भावी पीढ़ी तक पहुंचाना अति आवश्यक है।

विवाह संस्कार

सिरमौर जनपद की विवाह परंपराएं यहां की लो संस्कृति, सामाजिक संरचना और पारिवारिक मूल्यों को स्पष्ट रुप से प्रतिबिंबित करती है। विवाह दो परिवारों का पवित्र संस्कार माना जाता है। सिरमौरी बोली में विवाह को ब्याह कहा जाता है। सिरमौर में विवाह संस्कार को प्रायः पुरोहित पंडित द्वारा शिष्ट पंचांग से दिन मुहूर्त देखकर किया जाता है। इसके अलावा जाति गौत्र तथा कुल देवी देवता आदि मान्यताओं का भी विशेष रुप से ध्यान रखा जाता है तथा मुहूर्त के अनुसार ही विवाह की सभी रस्मों को निभाया जाता है जैसे कार पूजन (जिस दिन से विवाह आरम्भ होता है) बटणा, तेलबान, नधार (मामा-स्वागत) बारात स्वागत, फेरे, (सप्तपदी) कन्यादान, विदाई, छांजला-पाणी, गेरनू-फेरनू आदि। विवाह के इन सभी अवसरों पर लोक संस्कार गीतों का विशेष महत्व है। ये संस्कार गीत महिलाओं द्वारा पारंपरिक धुनों में गाए जाते है।

कार-पूजन (ब्याह गणना)

इस दिन से घर में शुभ कार्य / विवाह का आरम्भ हो जाता है तथा वर एवं कन्या पक्ष के घर निमन्त्रण के रुप में चिट्ठी एवं शगुन की मेहन्दी भेजी जाती है इसके अलावा विवाह में बनने वाले अनाज-दालें, चावल को मुहूर्त के अनुसार गांव की महिलाओं द्वारा साफ किया जाता है जिसे सिरमौरी बोली में कहा जाता है।

नधार

नधार वाले दिन मलोखियों (नाना एवं मामा और उनके परिजनों) का उनके आगमन पर मुख्य नधार के रुप में मंगल गीत गाकर विशेष स्वागत किया जाता है, तथा मामा-मामी घी का लोटा कपड़े, कँगना, अंगूठी, नथ आदि वर/ वधू को देते है और ग्रह शांत पूजन भी मामा-मामी द्वारा किया जाता है, मामी द्वारा वर/ वधू को घी शकर का घोल पिलाया जाता है जिसे सिरमौरी बोली में लड़ोज़ बोलते है, तथा तेल बाण बटणा आदि की रस्म की जाती है।

बारात स्वागत (फेरे सप्तपदी)

जब वर, वधू के घर बारात लेकर आता है तो वर एवं वधू के पिता द्वारा गणेश पूजन किया जाता है उसके पश्चात वधू की बहनों द्वारा वर से गेट पर रिबन कटवाकर वर और उसके साथ आए बारातियों का स्वागत किया जाता है, तथा वर को मंडप पर ले जाया जाता है और वधू के माता-पिता द्वारा अग्नि के समक्ष कन्यादान, फेरे, वरमाला आदि रस्में की जाती है और कन्या एवं कन्या के भाई द्वारा खिलों की आहूति दी जाती है। वर द्वारा वधू का सुहाग की वस्तु के रुप वधू की मांग में सिन्दूर दान और गले में मंगलसूत्र, नाक में सोने की तिली लगाई जाती है इसके पश्चात डोली विदाई की रस्म की जाती है, तथा वर के घर में वधू की सा द्वारा घर की दहलीज़ पर आरती की थाली से वधू का गृह प्रवेश किया जाता है।

छांजला-पाणी

विवाह की इस रस्म में वर, वधू को घर के समीप किसी जलाशय (बावड़ी, कुंआ, नाला) आदि के पास वर वधू को ले कर पंडित द्वारा वरुण देवता का पूजन करवाया जाता है और वधू द्वारा परिवारजनों को पानी पिलाया जाता है, तथा वहीं से वधू पानी से भरा लोटा या घड़ा अपने सिर पर रखकर घर तक लाती है।

गेरनू-फेरनू (पग-फेरे)

विवाह की सभी रस्में सम्पन्न होने के पश्चात वर वधू एवं वर के परिजन वधू के घर पहली बार जाते है और वधू के घर में नव-विवाहित जोड़े द्वारा सत्य नारायण भगवान की कथा का पूजन किया जाता है, सिरमौर में विवाह की प्रत्येक प्रक्रिया में गांव की महिलाओं द्वारा पारंपरिक संस्कार गीत गाए जाने का प्रचलन है।

विवाह संस्कार से सम्बधित गीत

विवाह संस्कार केवल एक सामाजिक परंपरा नहीं बल्कि भावनाओं, विश्वास और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ा हुआ पवित्र आयोजन है, इस संस्कार को आनंदमय और सार्थक बनाने के लिए विवाह संस्कार से सम्बन्धित गीतों की विशेष भूमिका रहती है। सिरमौर में इन गीतों की परंपरा पुराने समय

से चली आ रही है। यह गीत विवाह की विभिन्न रस्मों के साथ गाए जाते हैं। जब से विवाह की तैयारियां आरम्भ होती है तभी से घर-आँगन में गीतों की गूंज सुनाई देने लगती है। इन गीतों के माध्यम से महिलाएं अपने मन की भावनाएं, हास-परिहास और शुभकामनाएं प्रकट करती है तथा कहीं माता-पिता की ममता झलकती है तो कहीं भाई-बहनों का स्नेह और सहेलियों की चंचलता व्यक्त होती है। विवाह के सम्पन्न होने तक ये गीत गाए जाते है। जो वातावरण को खुशनुमा बना देते है।

कार पूजन (बधावा गीत)

यह विवाह के आरम्भ में गाया जाने वाला बधाई गीत है।

पहला बधावा सोबदी शुणाइए

जीमी माता (धरती माता) दे दरबारे जी में बोल रही ए

दुसरा बधावा जी सोबदी शुणाइए

देवी-देवता दे दरबारे बधावा जी में बोल रही ए.

पहली बधाई सभी को सुनाएए।

भावार्थ : लोकगीत की इन पंक्तियों में गायक सबसे पहले धरती माता (जीमी माता) के दरबार में बधाई प्रस्तुत करने की बात करता है, अर्थात् सभी मंगल कार्यों की शुरुआत पृथ्वी माता के आशीर्वाद और स्मरण से की जाती है। इसके बाद देवी-देवताओं के दरबार में बधावा गाकर उनसे सुख, समृद्धि और कल्याण की कामना की जाती है। इन पंक्तियों में लोक संस्कृति की धार्मिक आस्था, प्रकृति के प्रति सम्मान तथा देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धा का सुंदर चित्रण मिलता है।

निमन्त्रण गीत (नियुन्दड़ी गीत)

हरी-हरी बेल दा तोता

हरी-हरी बेल दा तोता

हामें तेरी निउंदड़ी आई हो रे

दिवा-बाती जागती रहियों.

भावार्थ: विवाह वाले घर में जब गांव की महिलाएं आती है तो वह गीत गाती है कि आपने हमें विवाह का निमन्त्रण दिया था, तो इसलिए आज हम आ गई है आप हमारा दिया जलाकर स्वागत करें।

तेल पाव गीत

दे दे री गुजरी दूध से दहीयाँ

दे देरी तेलण तेल

काया दे री तेल काया दा री दुध से दहीयाँ

काया दारी तेल

गउवां दा री दूध से दहीयाँ

शेरयों दा री तेल ....

भावार्थ : इस लोकगीत में विवाह की पारम्परिक रस्म "तेल लेपन" का सजीव चित्रण किया गया है। गांव की महिलाएं दुल्हे अथवा दुल्हन की माता से रस्म के लिए दूध, दही और तेल मांगती हैं तथा प्रेम पूर्वक पूछती हैं कि यह किसका दूध, दही और तेल है। इस पर माता उत्तर देती है कि यह गाय का शुद्ध दूध-दही तथा सरसों का तेल है। गीत की इन पंक्तियों में ग्रामीण जीवन की सादगी, पारिवारिक आत्मीयता एवं लोक परम्पराओं की मधुर झलक दिखाई देती है।

बटणा गीत

बाइबा कटोरा बटणे दा

बाइबा मलोदियां दो जणियाँ

बाइबा मलोदियां तीन जणियाँ...

भावार्थ: इस गीत में महिलाएँ दुल्हा-दुल्हन को बटणा लगाते हुए बटणे के कटोरे की प्रशंसा करती है। महिलाएँ गाती है कि यह कटोरा कितना सुंदर और शुभ प्रतीत हो रहा है। कभी दो, कभी तीन या चार महिलाएँ मिलकर वर-वधू को बटणा लगाती हैं। परिवार की महिलाएँ, गाँव की बहनें, सखियाँ एवं सहेलियाँ बारी-बारी से इस रस्म में भाग लेकर उत्सव का आनंद लेती हैं।

सेहरा गीत

आओ रे मानणियों बैठो दरीए दलिचे

का मोल शिरे दा पाया

का मोल शिरे दी लडियाँ दा

छः लाख शिरे दा मोल पाया

नौ लाख शिरे दी लडियाँ दा...

भावार्थ:- गांव की सहेलियाँ आती है और बारातियों का स्वागत करते हुए उनको हुए उनको दलिचे पर बैठने को कहती है तथा दुल्हे का सुन्दर सेहरा देखकर उसका मोल पुछती है तथा दुल्हे की तरफ के बाराती कहते है कि सेहरें का मोल है छः लाख तथा नौ लाख की लड़ियाँ है।

बारात स्वागत गीत

खोड़े टीकों, खोड़े टीकों बरातुओ

विचो लागा ओधमो गेटो।

केथे लाड़ा केथे लाड़ा लाड़ी रा

रिब्नो दे कोटाए

केजा भाए केजा भाए म्हारे लाड़े रा

मारे लाणा टिका कुंगू रा...

भावार्थ:- यह गीत उस समय गाया जाता है जब वर बारात लेकर वधू के घर पहुँचता है। वधू पक्ष की महिलाएँ एवं वर की सालियाँ हँसी-खुशी और हास-परिहास के साथ बारातियों का स्वागत करती हैं। गीत में सालियाँ बारातियों से कहती हैं कि वे वहीं ठहरें, क्योंकि द्वार पर गेट लगा है और पहले वर से रिबन कटवाया जाएगा। इसके पश्चात वे पूछती हैं कि वर का भाई कौन है, क्योंकि उसे तिलक लगाकर सम्मानित करना है।

फेरे का गीत:-

पहला फेरा जो पाया जी

पहला वचन निभाया,

दूसरा फेरा जो पाया जी

दूसरा वचन निभाया जी

सात फेरे जो पाए सातों वचन निभाए जी......

भावार्थ:- वर-वधू अग्नि के चारों और सात फेरे लेते है प्रत्येक फेरे के साथ एक वचन जुड़ा होता है जो आपसी प्रेम विश्वास, सहयोग तथा उत्तरदायित्व को दर्शाता है तथा गांव की महिलाएं सरल शब्दों में इन वचनों को निभाई का गीत गाती है।

पडुवा गीत

हाय रे सइयां इस घर शादी झमा झम

हाय रे सइयां इस घर डोली

झमा झम हाय रे सइयां इस घर बहुआ

झमा झम हाय रे सइयां इस घर शादी झमा झम..

भावार्थः

गांव की महिलाएं शादी वाले घर जाकर पडुवा गीत गाती है इस घर में शादी विवाह का उत्सव हो रहा है कितनी चहल-पहल और सजावट है। इस घर में डोली भी है और आज नववधू का आगमन भी हुआ है तथा खुशी का माहौल बन गया है।

डोली विदाई

बहारे आओ रे श्यामा सुन्दरी

ठनों बन्ना रे बलावे

आऊँ तो रे आऊँ बन्ना

किशी आऊँ आं तो बापु दी शरमाऊ.....

भावार्थ:- इसमें दुल्हा दुल्हन को अपने घर चलने को कहता है तो दुल्हन कहती है कि मैं कैसे आऊँ बाहर मैं तो अपने पिता जी से शर्माती हूं।

निष्कर्षः

सिरमौरी विवाह संस्कारों में गाए जाने वाले गीत लोक संस्कृति की जीवंत परंपरा एवं अमूल्य धरोहर है यह संस्कार गीत पुराने समय से चले आ रहे है इन गीतों में लोकविश्वास, परंपरागत मर्यादाएं और सामाजिक संरचना स्पष्ट रुप से परिलक्षित होती है परन्तु वर्तमान में आधुनिक प्रभाव के कारण इन गीतों का प्रचलन कम होमा जा रहा है क्योंकि हमारी भावी पीढ़ी अपने संस्कारों से विमुख होकर पाश्चात्य संस्कृति को अपना रही है। आज के युवा वर्ग बॉलीवुड संगीत की ओर आकर्षित होते है तथा शादी ब्याह में भी डी० जे० स्पीकर लगाए जाते है और इन मांगलिक गीतों को गाने वाले एवं सुनने वाले बहुत कम लोग ही बचे है इसके अलावा शहरीकरण एवं बदलती जीवन शैली के कारण अब लोग विवाह होटलों में करने लगे है जिस कारण पारंपरिक रीति-रिवाज भी समाप्त होने लगे है जो संस्कार चार से पांच दिन तक चलते थे व्यस्तता के कारण वो अब एक दो दिन में ही सम्पन्न किए जाते है। अतः इस अमूल्य धरोहर को बचाने के लिए इन परंपरागत गीतों का संकलन एवं संरक्षण अत्यंत आवश्यक हो गया है। अन्यथा आने वाली पीढ़ी हमारे पारंपरिक संस्कारों को कभी समझ ही नहीं पाएगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. https://hpsamb.org
2. https://hpsirmour.nic.in
3. गौतम, खुशी राम, सिरमौरी लोक साहित्य, हिमाचल कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी, शिमला, 1992.
4. साक्षात्कार: श्यामा देवी, राजगढ़ सिरमौर, 14/11/2025.
5. साक्षात्कार: बाला देवी, नौहराधार सिरमौर, 28/12/2025.
6. साक्षात्कार: हेमलता गौतम, सरांहा सिरमौर, 18/11/2025.
7. साक्षात्कार: देबू देवी, नारग सिरमौर, 15/09/2025.